رسالة إلى هندوسي ـ هندي

شعبة توعية الجاليات بالزلفي

هاتف: ٠٦ ٤٢٣٤٤٦٦ فاكس: ٠٦ ٤٢٣٤٤٧٧ ص.ب: ١٨٢

رسالة إلى هندوسي

باللغة الهندية

تأليف وإعداد : سيد معراج رباني

इस्लामिक दावा ऐन्ड गाईडेन्स सेन्टर,
हाइल, सऊदी अरब.

TEL : 5334748 - 5310116 FAX: 5432211
P.O. BOX : 2843

ⓒ المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بحائل ، ١٤٢٠هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

رباني ، سيد معراج

رسالة إلى هندوسي - الرياض

١٦ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم

ردمك : ٠ - ٥ - ٩١٨٧ - ٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١ - الإسلام - مبادئ عامة   أ- العنوان

ديوي ٢١١   ٢٠ /١٧٣٦

رقم الايداع ٢٠ /١٧٣٦

ردمك : ٠ - ٥ - ٩١٨٧ - ٩٩٦٠

बिस मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

पिय्र मित्र !

आशा है आप कुशल पुर्वक होंगे. ये एके धार्मिक पत्र है जो आप की सेवा मे भजे रहा हुं इस पत्र का मक़सद आप को आपके जन्म के विष्य मे बतलाना है ओर ये ज्ञान देना है कि आप का असली जन्म दाता कौन है ? आप को ये सव्च्छ जीवन ओर शाँन्ती से भरा जीवन प्रदान करने वाला ओर रोजी देने वाला कौन है ? इस स़ंसार को चलाने वाला ओर इस वीशाल आकाश ओर धरती को बनाने वाला सूर्य ओर चन्दम्रां उगाने वाला रात्री ओर दिन को लाने वाला कौन है ? मुझे भरपुर आशा है कि आप इस पत्र को पढ़ कर अवश्य विचार करेंगे ओर सही मार्ग जानने की कोशिश भी करेंगे !

पिय्र मित, इस विशाल संसार का इतना बडा गोला ओर इस में विभन्न प्रकार की अदुभतु चीजे़ ओर इस मे रहते वसते जीव जन्तु ये सब के सब एके ऐसे महान मालिक के अधीन ओर

उसी के आज्ञा पालन कर रहे हैं उसी के इशारे पर चलते हैं ओर उसी के गुलाम, प्रजा हैं जो मालिक बहूत बडी शक्ति ओर बहुत बडी ताकत वाला है जो जब चाहे जो चाहे जहां चाहे जैसे चाहे सब कुछ कर सकता है उसके कार्यो मे कोइ भी बाधाँ नहीं डाल सकता इस विशाल संसार मे उसका कोइ भी भाग्यदार नहीं उसके ऊपर किसी का हुकम नही चलता वो सब का हाकिम है उसने किसी से जन्म नही लिया ना ही उसको किसी ने जन्म दियाहै ना ही उस से किसी ने जन्म लिया है ! वो अकेला है सब से बेपरवाह है उसके कोइ माता पिता नही ओर ना ही उसके बीवी बच्चे है वो हमेशा से है ओर हमेशा रहेगा उसको कभी मौत नही आयेगी ओर ना ही उसको कभी नींद या नीद की झपकी ऊंघ आती.है वो विशाल शक्तियों का मालिक है उसे हम , अल्लाह ,कहते हैं जिसका अर्थ यह है कि जो मालिक इतनी बडी शक्तियों वाला है कि सारा संसार उसी का है ओर सब कछु उसी के

अधीन है तो पूजा पाठ का असली हक़दार भी वही है!

उसी का हक़ है कि उसी के सामने झुका जाये माथा टेका जाये उसी से विन्ती की जाऐ उसी से मांगा जाऐ ओर उसी के लिये अपना जीवन प्रदान कर दिया जाऐ . उसके अलावा किसी भी जीव जन्तु. देवी देवता या किसी भी जिन्न, भूत ,परी को न पूजा जाऐ ना उनसे कुछ मांगा जाऐ नाही उनके सामने अपने शीश झुकाऐ जाऐं ओर ना ही ये विश्वास रखा जाये कि अल्लाह के अलावा कोइ कुछ बना बिगाड सकता है !

एके बात ध्यान में रहे कि अल्लाहतआल किसी के रुप में उपस्तिथ नहीं होता और वो ना ही किसी का रुप धारण करता है!

पिय्र मित्र !

अगर आज्ञा दें तो एके बात पूछू ? हम कितने भोले ओर बुध्धू हैं कि हम उन चीज़ां की पूजा करते हैं जिन्है अल्लाह ने हमारे लिये पैदा किया है ! हम उनहे अपना ईश्वर ओर भगवान

मानते हैं जो खदु हमारे गुलाम हैं उनके अनदर तनिक भी शक्ति नही कि वो हमारा कुछ बना बिगाड सकें यहां तक कि अगर खदु उन पर कोइ मक्खी बैठ जाऐ तो वे उसे हंकाल भी नही सकते हम कंकर, पत्थर नदी नाले, चन्द्रमां, सुर्य, गाय, बैल पेड, पौध यहां तक कि लिंग तक के सामने अपना सिर झुका देते हैं! उन से बिनती करने लगते हैं उनकी पूजा पाठ ओर उनके ऊपर चढावे चढाने लगते हैं ओर उनको अपना ईश्वर दाता ओर भगवान मानने लगते हैं भला सोचें तो सही कि वो हमें क्या दे सकते हैं ? वो बोल भी नहीं सकते वो हिल जुज भी नहीं सकते अपना अच्छा बुरा भी नही सोच सकते तो वो हमारा क्या बना बिगाड सकते हैं ?

ओर हमारे भोले पन की तो हद होगई कि हमी में से एके मनुष्य गढड से मटटी निकालता है उसे सड़ाता है पैरों ओर हाथों से गूँधता है फिर उससे सरस्वती देवी की या राम, सीता या गणशे की मूर्ती बनाता है मूर्ती बनाते वक्त देवी की छातियों को गोल करता है उनके गाल

संवारता है ओर उनहैं कपडा पहना कर बना संवार कर एके स्थान पर रखता है फिर पंडित जी आते हैं ओर लोग इकटठा हो कर उसकी पूजा शुरु कर देते हैं बुन्दियां, जलेबियां, नारियल, फूल पत्तियां ओर रुपेय पैसे चढाये जाते हैं देवी से विन्ती की जाती है वहां सर झुकाऐ जाते हैं ओर बहुत सी चीजें की जाती हैं जिनकी जानकारी आप को अवश्य होगी !

पश्र्न यह है कि उस मूर्ती का बनाने वाला कौन है ?एके आम मनुष्य ही तो है जिसने उसको बनाया सजाया संवारा तो किया? भगवान इतना मजबूर है कि वो हमारा तुम्हारा मुहताज हो ? फिर मटटी कि बनाई हुई वो मूर्ती क्या अल्लाह हो सकति है ? वो तो बोल भी नहीं सकती सुन भी नहीं सकती देख भी नहीं सकती चल फिर भी नहीं सकती या उस पर खान पान जो चढाये जाते हैं वो उसे खा पी भी नहीं सकती बल्कि अगर उसके मुंह को कुत्ता चाटने लगे तो वो उसे भगा भी नहीं सकती जरा विचार की जीये कि अगर वो इतनी ही शक्ति शाली होती

तो खदु बखुद बन जाती वो किसी मनुष्य के बनाने की मुहताज न रहती फिर जिसके अनदर कुछ भी ताक़त नाहो अपने हृदय से पूछिये कि वो मूर्तीयाँ या देवी देवता ईश्वर कैसे हो सकते हैं ? जो इतना मजबूर लाचार व बेबस हों वो भगवान कैसे हो सकता है? भगवान तो बहुत बडा है वही सारे संसार का मालिक है धरती ओर अकाश मे जो कुछ भी है सब उसी के अधिकार मे है कोइ भी जीव जो इस धरती पर जन्म लेता है वो उसकी पकड से बाहर नहीं है वो उसके पैदा होने पलने बढने ओर मरने तक की जगहों को जानता है अल्लाहतआला अपनी पवित्र किताब मे फरमाता है .

ए लोगो अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करो जिसने तुम्हे ओर उनलोगोको जो तुम से पहले आऐ थे जन्म दिया ताकि तुम सज्जन पुरूष बन जाओ जिसने तुमारे लिये धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया , ओर उस से बारिश उतारी फिर उसके माध्येम से फल आदी उतपन्न किया इसलिऐ तुम अल्लाहतआला

का भाग्यदारा किसी को न बनाओ ओर यह तुम जानते हो!

अब आप सोचें कि हम कितने भटके हुये हैं सही मार्ग से कितने दूर हैं ओर कितने भोले हैं कि उस अल्लाहतआला को छोड कर जिसने हमें पैदा किया प्यारी प्यारी आँखें दी नाक दी, हाथ पैर दिये, जुबान दी,चलने ओर काम करने की ताकत दी,सोच विचार करने ओर सही गलत सोचने के लिय बुध्दी दी उस अल्लाहतआला को छोड कर हम अपने हाथों की बनाई हुई देवी देवताओं की मूर्तीयों ओर कंकर व पत्थर को अपना ईश्वर बनाकर पूजते हैं उनके फोट् तक को पूजते हैं उनसे दया की भीक मांगते हैं उनसे अपने दुख दर्द बयान करते हैं ओर उन्हें अपने भ ले बुरे का मालिक समझते हैं ये उस अल्लाहतअला के साथ बहुत बडा अन्याय है जिसने आपको जन्म दिया ओर जो आपको आहार देता है और खिलाता पिलाता है!

पिय्र मित्र जो लोग अपने मालिक के गददार होते हैं वे किसी के साथ वफा नहीं कर सकते

यही कारण है कि हिन्दू समाज स्पष्ट तौर से टूट कर बिखर चुका है क्योंकी हिन्दुओं की एके भारी संख्या जो अपने आपको हिन्दू समझती है वो ब्राहमणवाद के जुल्म व सितम ओर जात पात की चक्की मे पिसते पिसते हिन्दू ईजम से उक्ता चुकी है ओर ब्रहमणो के बनाऐ हुऐ नियमो को निहायत ही घृणा से देख रही है!

यह एके कड़वा सत्य है कि हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं है बल्कि यह प्राचीन काल मे लोगों के खदु अपनी बुध्दी से बनाये हुये जीवन गुजारने के नियम है मगर इस्लाम तो यह , अल्लाहतआला, की अज़ीम निअमत है जो उसने सारे संसार के लोगों को तोहफे के तौर पर दिया है यही कारण है कि अल्लाहतआला के इस बनाऐ हुऐ नियम में इन्सानों के बीच कोई उंच नीच नहीं ओर ना ही कोइ जात पात का भदे भाव है ओर न ही कोइ छूत छात है ,अल्लाहतआला के यहां सब बराबर हैं उसने सबको एके ही मां बाप से पैदा किया है उसके यहां कोइ छोटा बड़ा नहीं उसके यहां

बड़ा वही है जो सब से ज्यादा उसका सम्मान करता हो और उस से डरता हो !

पन्तु आप ज़रा हिन्दु धर्म पर दृष्टी डालें तो बडा आश्र्चय होता है कि हिन्दू धर्म नें किस तरह सारे मनुष्य को चार टकुडों में बांट रखा है ओर ये विश्वास रखा हुआ है कि ब्राहमण ने ब्रहम्मा के सर से जन्म लिया है इसलिये सारे सन्सार में वही पवित्र ओर ईश्वर का मित्र है , क्षत्री ब्रहम्मा के भजुाओ से पैदा हुआ है, वेशय ब्रहम्मा के टांगों से पैदा हुआ है , शोधिृय ब्रहम्मा के निचले पावों से पैदा हुआ है ! ईन चारों वरगों मे हर एके का काम अलग अलग है ब्राहमण को पूरी स्वतन्त्ता हासिल है वो जो चाहे हिन्दू समाज मे करे जिसकी भी बहू बेटी ले ले उसको कुछ भी नहीं कहा जाऐगा ओर जिसका भी माल खाले उसके लिये हलाल है शोध ब्रहमण की सेवा के लिये जन्म लिया है उसका सब कुछ ब्रहमण के लिये है वो उसी का गुलाम है उस बेचारे को पवीत्र गीता पढने तक की इजाज़त नहीं उसे मन्दिर में पूजा पाठ करने यहां तक कि

उसे अन्दर जाने तक की अनुमती नहीं मिलती उसे छूत समझा जाता है भला विचार करें कि क्या ईशवर इस तरह अपने प्रजाओं पर अत्याचार कर सकता है ? कभी नहीं वो इस तरह अपने मानने वालों के बीच फर्क नहीं करता वो अल्लाहतआला तो अपने पवित्र कुरआन मे यह कहता है !

ए लोगो मैने तुम सबको पैदा किया है तुम सब के मां बाप एके है मैने इस लिये तुम सब को अलग अलग रखा हुवा है ताकी तुम एक दूसरे से पेम्र ओर मेल व्यवहार करो याद रखो तुममें मेरा नजदीकी वही है जो सब से ज्यादा हम से डरने वाला है .

यह है अल्लाहतआला का आदेश ओर उसका पैग़ाम ओर यही है इस्लाम की पुकार .

ओर इस्लाम नाम है अल्लाहतआला के आदेशो का अनुर्वतन ओर उसका आज्ञापालन करना ओर इस्लाम शब्द का एक दूसरा अर्थ भी है सुलह, शान्ती, कुशलता,संरक्षण, शरठा आदि , मनुष्य को वास्तविक शान्ती उसी समय

मिलती है जब वोह अपने आपको अल्लाहतआला के अर्पण करदें और उसी के आदेशों क अनुसार जीवन गुज़ारने लगें ! एसै ही जीवन से दिल को शान्ती मिलती है ओर समाज मे भी उसी से वास्तविक शान्ती की स्थापना होती है वास्तव मे अगर हम देखें तो दुन्या में जितनी चीजें हैं सब मुसलमान हैं चांद, और तारे, पृथ्वी ओर आकाश, सूर्य ओर प्रकाश ताप ओर जल आदी यह सब अल्लाहतआला ही के बनाऐ हुवे नियम ओर विधी के अधीन हैं क्योंकी अल्लाहतआला ने उन के लिये जो भी मार्ग नियत किया है ये सब उसके तनिक भर खिलाफ नहीं करते ! ओर मनुष्य भी अगर अपने शरीर मे विचार करे तो उसे पता चल जाऐ गा कि उसके शरीर का एके एके अंग वही काम कर रहा है जो उस के लिये निशचित है ओर रीति से कर रहा है जो उसे बता दी गई है !

ये प्रबल नीयम जिस में बडे बडे ग्रहों से ले कर भमी का छोट से छोटा कण तक जुडा है एके महान शासक का बनाया हुआ नियम है

ओर पूरी दुन्या उसी शासक के आदेश ओर उसी के आज्ञा का पालन करती है इस लिये समर्पण विश्व का धर्म इस्लाम है!

पिय्र मित्र अन्त मे हम आप से यह कह कर अनुमती चाहते हैं कि आप इसलाम धर्म को उसके नियमों ओर उसके आदेशों को पढ ओर विचार करें कि क्या हम वास्तव में अपने मालिक अल्लाहतआला, के वफादार हैं ?

धन्यवाद

आप का मित्र

सय्यद मेराज रब्बानी